Publication Date 01.04.2026
Postal Registration No. G/CHD/0096/2024-26
Registrar of Newspapers of India
Regd. No. 46809/70 I Total Pages 28
Posted at MBU Chandigarh 1st of Every Month

HARCOFED

# हरियाणा सहकारी प्रकाश
Haryana Sahkari Parkash

वर्ष : 57 / अंक 04 / 1 अप्रैल, 2026 / वार्षिक मूल्य : ₹ 500 / प्रति कापी : ₹ 50

## युवाओं के साथ सहकारिता

सम्पादकीय

# आजीविका के बेहतर साधन सहकारी उद्यम

सहकारी क्षेत्र नागरिक को आजीविका उपार्जन के साथ सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार प्रदान करता है। आज देश में सबसे अधिक रोजगार सहकारिता क्षेत्र ही दे रहा है। युवाओं को चाहिए कि वे सहकारी क्षेत्र में सहकारी समितियां बना कर फूड प्रोसेसिंग यूनिट, मशरूम फार्म, मत्स्य पालन, डेयरी व्यवसाय इत्यादि से सम्बन्धित उद्यम स्थापित कर खुद की आजीविका के साथ–साथ उद्यम में अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करें।

प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों के अनेक सफल सहकार अपने कार्य का अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं जो हमारे लिए उदाहरण के रूप में विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त युवा आधुनिक कृषि तकनीक को अपनाकर अपनी आय भी बढ़ा सकते हैं।

सहकारी समितियों के योगदान से देश में श्वेत क्रांति आई, जिससे आज अमूल, वीटा, वेरका, पराग जैसी संस्थाएं देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हरियाणा में सहकारी डेयरी विकास प्रसंघ लिमिटेड के वीटा ब्रांड के उत्पाद ग्राहकों में अत्यधिक लोकप्रिय बने हुए हैं। डेयरी प्रसंघ द्वारा शुद्धता के प्रतीक वीटा उत्पाद की बिक्री के लिए महत्वपूर्ण स्थानों पर वीटा बूथ खोले हुए हैं। इस से डेयरी व्यवसाय को बढ़ावा मिलने के साथ ही सहकारों की आय में व्यापक सुधार होता है।

इसी प्रकार हरियाणा राज्य सहकारी आपूर्ति एवं विपणन प्रसंघ लि0 द्वारा सहकारी क्षेत्र में हैफेड ब्रांड के उत्पाद तैयार करके देश व प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। हैफेड के लोकप्रिय उत्पादों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए बिक्री केन्द्रों की स्थापना की गई है। इसके अतिरिक्त देश के एन.सी.आर. और ट्राईसिटी में हैफेड के और अधिक फ्लैगशिप स्टोर खोले जाने पर भी कार्य किया जा रहा है ताकि सहकारी उद्यम को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ लोगों को बेहतर उत्पाद उपलब्ध करवाएं जाते रहें। **हैफेड के उत्पाद विदेशी ग्राहकों में भी लोकप्रिय हैं।**

युवाओं को सहकारी उद्यमिता के माध्यम से प्रधानमन्त्री की मेक इन इंडिया योजना के तहत लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देना चाहिए। इससे युवाओं को रोजगार उपलब्ध होने के साथ ही उत्पादक किसानों और वितरकों का समान रूप से भला होगा।

# सहकारिता विभाग हरियाणा के आयुक्त एवं सचिव बने डॉ. साकेत कुमार, भा.प्र.से

हरियाणा सरकार ने भारतीय प्रशासनिक सेवा 2005 बैच के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. साकेत कुमार को सहकारिता विभाग हरियाणा के आयुक्त एवं सचिव का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है। इन्होंने 24 मार्च 2026 को अपने पद का कार्यभार ग्रहण किया। आप वर्तमान में माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा कार्यालय में माननीय मुख्यमंत्री जी के अतिरिक्त प्रधान सचिव, आयुक्त एवं सचिव, विकास एवं पंचायत विभाग, हरियाणा और प्रबंध निदेशक हरियाणा विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (HPGCL) का कार्यभार भी संभाले हुए हैं।

डॉ. साकेत कुमार को प्रशासनिक दक्षता, दूरदर्शिता, समयनिष्ठ, परिश्रमी एवं कर्मठ अधिकारी और जनसेवा के प्रति प्रतिबद्धता के लिए पहचाना जाता है। इन्होनें हरियाणा प्रदेश के प्रशासनिक तंत्र में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए अपनी कार्यशैली से सकारात्मक एवं प्रभावशाली छाप छोड़ी है।

इन्होनें पूर्व में हरियाणा के स्वास्थ्य विभाग के क्षेत्र में लंबे समय तक अपनी प्रशासनिक सेवांए दी हैं जैसे महानिदेशक एवं विशेष सचिव चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग (DMER), आयुक्त खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA), मिशन निदेशक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM), प्रबंध निदेशक हरियाणा चिकित्सा सेवा निगम लिमिटेड (HMSCL), विशेष सचिव, स्वास्थ्य विभाग, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आयुषमान भारत हरियाणा स्वास्थ्य संरक्षण प्राधिकरण (ABHHPA) और विशेष तौर पर आयुष विभाग शामिल हैं। **इन्होनें आयुष विभाग में महानिदेशक के रूप में कार्य करते हुए विभाग के आधुनिकीकरण, प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण और आयुष सेवाओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।** इसके साथ–साथ इन्होनें उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम लिमिटेड (UHBVN) के प्रबंध निदेशक, नागरिक उड्डयन विभाग हरियाणा के सलाहकार, उद्योग एवं वाणिज्य और तकनीकी शिक्षा विभाग के निदेशक के तौर पर अपनी प्रमुख सेवांए दी हैं और उत्कृष्ट कार्यशैली की छाप छोड़ी है।

विभिन्न प्रशासनिक दायित्वों के दौरान इन्होने नीतिगत निर्णयों को प्रभावी रूप से लागू करते हुए जनहितकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

सहकारिता विभाग में आपके आगमन से प्रदेश का सहकार आशातीत है कि आप जैसे अनुभवी एवं प्रतिभावान अधिकारी के नेतृत्व में सहकारिता विभाग हरियाणा नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। आपके मार्गदर्शन में सहकारी आंदोलन जनहित आधारित गतिविधियों को गति देगा तथा विभाग **सहकार से समृद्धि** के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने में सफल होगा।

# श्री मनीराम शर्मा, भा.प्र.से.
# बने रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां, हरियाणा

हरियाणा सरकार ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2009 बैच के अधिकारी श्री मनीराम शर्मा को रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, हरियाणा का कार्यभार सौंपा है। इन्होने 20 मार्च 2026 को रजिस्ट्रार मुख्यालय, पंचकुला में अपने पद का कार्यभार ग्रहण किया। आप पूर्व में (सन् 2019–2020) भी बतौर रजिस्ट्रार सहकारी समितियां हरियाणा के पद पर कार्य कर चुके हैं।

आपने हरियाणा प्रदेश के प्रशासन में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है जिसमें प्रबंध निदेशक हरियाणा बिजली वितरण निगम लिमिटेड (UHBVN), श्रम आयुक्त, हरियाणा, सचिव राज्य सैनिक बोर्ड और ऊर्जा विभाग, हरियाणा, विशेष सचिव श्रम, गृह, गृह–II, वित्त, सहकारिता विभाग हरियाणा, आयुक्त गुरूद्वारा चुनाव, निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता और कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा शामिल हैं।

आप जैसे अनुभवी एवं परिश्रमी अधिकारी के रजिस्ट्रार लगने से विभाग को महत्वपूर्ण विषयों पर आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा और आपकी कुशल कार्यशैली के साथ मिलकर सहकारिता विभाग हरियाणा सहकार से समृद्धि के संकल्प को साकार रूप प्रदान करेगा।

# हरियाणा सहकारी प्रकाश

**मुख्य संरक्षक**
डॉ. साकेत कुमार, भा.प्र.से.
आयुक्त एवं सचिव
सहकारिता विभाग, हरियाणा

**संरक्षक**
मनीराम शर्मा, भा.प्र.से.
रजिस्ट्रार सहकारी समितियां,
हरियाणा

**मुख्य सम्पादक**
नरेश गोयल
प्रबन्ध निदेशक, हरकोफैड

**सम्पादक**
सौरव अत्री

## सुविचार

**एकता में अपार शक्ति है।**
**एकजुट भारत ही सशक्त भारत है।**

**-सरदार वल्लभभाई पटेल**

'हरियाणा सहकारी प्रकाश' में प्रकाशित लेखकों के विचारों के साथ हरकोफैड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के अपने विचार हैं।

**हरियाणा सहकारी प्रकाश की विज्ञापन दरें :–**

| क्र.सं. | विवरण प्रति प्रकाशन | रुपये |
|---|---|---|
| 1. | पूरा पृष्ठ टाईटल रंगीन | 30000/- |
| 2. | पूरा पृष्ठ रंगीन | 20000/- |
| 3. | पूरा पृष्ठ श्याम–श्वेत | 12000/- |
| 4. | आधा पृष्ठ श्याम–श्वेत | 6000/- |

## इस अंक में पढ़िए

| | |
|---|---|
| सीएम-पैक्स | 6-7 |
| सहकारिता और युवा आत्मनिर्भर भारत की सशक्त नींव | 8-9 |
| परिवारों की खुशहाली और नारी सशक्तिकरण का बड़ा माध्यम सहकार | 10-12 |
| प्राकृतिक खेती : परंपरा, पर्यावरण और संभावनाएँ | 13-14 |
| पृथ्वी दिवस : पर्यावरण संरक्षण का वैश्विक संकल्प | 15-16 |
| वैसाखी | 17 |
| प्रभु परशुराम | 18 |
| नव वर्ष का आगमन | 19 |
| राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा | 20 |
| वीटा प्लांट में दो दिवसीय कर्मचारी प्रशिक्षण | 21 |
| कर्मचारी प्रशिक्षण | 22 |
| विचार गोष्ठी | 23 |
| महिला दिवस समारोह | 24 |
| किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम | 25 |
| विज्ञापन | 26-27 |

CM PACS खरा बाजार

# सीएम–पैक्स

(Comprehensive Multi & Purpose Activities Cooperative Society)

हरियाणा सरकार द्वारा ग्रामीण विकास, सहकारिता आंदोलन को सशक्त बनाने तथा रोजगार के नए अवसर सृजित करने के उद्देश्य से सीएम–पैक्स (Comprehensive Multi & Purpose Activities Cooperative Society) की स्थापना की पहल की गई है। इस दिशा में दिनांक 25.12.2023 को जारी पत्र के माध्यम से सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे IEC (सूचना, शिक्षा एवं संचार) गतिविधियों के माध्यम से सीएम–पैक्स के गठन को प्रोत्साहित करें।

सीएम–पैक्स के लिए मॉडल उपविधियां (Bye & Laws) निर्धारित की गई हैं, जिनमें इसके उद्देश्यों और कार्यों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इन समितियों का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र से जुड़ी गतिविधियों को एकीकृत रूप से बढ़ावा देना है।

## मुख्य गतिविधियाँ

सीएम–पैक्स के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की प्राथमिक गतिविधियाँ शामिल हैं। इनमें कृषि क्षेत्र में बैकवर्ड लिंकज जैसे उन्नत बीज, खाद, सिंचाई सुविधाएं, कृषि यंत्र, कीटनाशक आदि उपलब्ध कराना शामिल है। वहीं फॉरवर्ड लिंकज के तहत कृषि उत्पादों का संग्रहण, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, भंडारण, प्रसंस्करण और विपणन की व्यवस्था की जाती है। इसके साथ ही डेयरी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, बागवानी आदि क्षेत्रों को भी बढ़ावा दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त, सीएम–पैक्स विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों जैसे उचित मूल्य की दुकान, खाद्य प्रसंस्करण, पेट्रोल/डीजल वितरण, बीमा सेवाएं, कॉमन सर्विस सेंटर, जन औषधि केंद्र, हर हित स्टोर आदि का संचालन भी कर सकते हैं। ये समितियाँ सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में भागीदारी करते हुए लाभार्थियों तक सेवाएं पहुंचाने का कार्य भी करती हैं।

सीएम–पैक्स आधुनिक तकनीकों के प्रसार, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के कार्यान्वयन तथा माइक्रो–इंश्योरेंस जैसी सेवाएं प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, ये भूमि, भवन, गोदाम आदि आवश्यक संसाधनों का अधिग्रहण या किराये पर लेकर अपनी गतिविधियों को संचालित कर सकती हैं।

औद्योगिक गतिविधियों के अंतर्गत सिलाई, हस्तशिल्प, परिवहन सेवाएं, निर्माण कार्य, सुरक्षा सेवाएं, प्लेसमेंट सेवाएं, कैटरिंग, टिफिन सेवा और इवेंट मैनेजमेंट जैसी गतिविधियाँ भी शामिल की गई हैं। साथ ही, स्थानीय निकायों, सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों एवं निजी संस्थाओं के साथ सहयोग कर समाज के समग्र विकास को बढ़ावा दिया जाता है।

## द्वितीयक गतिविधियाँ

समितियाँ उन सभी गतिविधियों को भी अपनाने के लिए अधिकृत हैं जो उनके मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हों, बशर्ते उन्हें आम सभा और सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार से अनुमति प्राप्त हो।

## सरकारी पहल और प्रगति

हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री ने 23 फरवरी 2024 के बजट भाषण में वर्ष 2024–25 के दौरान 500 नए सीएम–पैक्स स्थापित करने की घोषणा की थी। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता को बढ़ावा देना और आर्थिक विकास के नए रास्ते खोलना है।

बाद में 10.12.2024 को उपविधियों में संशोधन कर सदस्यता शुल्क को काफी कम कर दिया गया, जिससे अधिक से अधिक लोग इन समितियों से जुड़ सकें। सदस्य का शेयर मनी 20,000 रुपये से घटाकर 1,000 रुपये तथा नवीनीकरण शुल्क 5,000 रुपये से घटाकर 500 रुपये कर दिया गया।

वर्तमान में हरियाणा में 337 सीएम–पैक्स पंजीकृत हो चुके हैं। 02.12.2025 को सरकार ने इन समितियों को उनके उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न कार्यों के संचालन की अनुमति प्रदान की, जिसे 19.02.2026 को सभी संबंधित विभागों को भेजा गया।

## रोजगार और व्यवसाय के अवसर

सीएम–पैक्स को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं। डेयरी क्षेत्र में विटा बूथ संचालन के अवसर प्रदान किए गए हैं, जिनके लिए 39 स्थान चिन्हित किए गए हैं। इसके अलावा 40 सीएम–पैक्स को कॉमन सर्विस सेंटर आईडी भी जारी की गई हैं।

कुछ समितियों ने पहले ही अपनी गतिविधियाँ शुरू कर दी हैं, जैसे कीटनाशक और बीज की बिक्री, कृषि उपकरणों की आपूर्ति तथा श्रम सेवाएं प्रदान करना।

इसके अतिरिक्त, कई सीएम–पैक्स ने वीटा व्यवसाय शुरू करने में रुचि दिखाई है। सहकारी चीनी मिलों को भी निर्देश दिए गए हैं कि वे गन्ना उत्पादन, कटाई और परिवहन से संबंधित कार्यों में सीएम–पैक्स को शामिल करें।

## हर हित स्टोर योजना

वर्ष 2026–27 के बजट में माननीय मुख्यमंत्री ने हर हित स्टोर योजना के तहत 700 नए स्टोर खोलने की घोषणा की है। इस योजना में सीएम–पैक्स को प्राथमिकता दी जाएगी। वर्ष 2021 से 2025 के बीच इस योजना का कुल कारोबार 1000 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है, जो आगे बढ़ने की संभावना है।

सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि सीएम–पैक्स को मल्टी–पर्पज पैक्स (M & PACS) के समान बनाया जाएगा, ताकि उन्हें समान सुविधाएं और योजनाओं का लाभ मिल सके।

सीएम–पैक्स योजना हरियाणा में सहकारिता आंदोलन को नई दिशा देने वाली एक महत्वपूर्ण पहल है। यह न केवल किसानों और ग्रामीण समुदाय को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी, बल्कि रोजगार के नए अवसर उत्पन्न कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगी। यदि इस योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो यह ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हो सकती है।

# सहकारिता और युवा आत्मनिर्भर भारत की सशक्त नींव

भारत आज विश्व के सबसे युवा देशों में अग्रणी है। देश की लगभग आधी से अधिक आबादी युवा वर्ग से संबंधित है, जो ऊर्जा, नवाचार और संभावनाओं का प्रतीक है। यदि इस युवा शक्ति को सही दिशा और अवसर प्रदान किए जाएं, तो भारत न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बन सकता है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी एक आदर्श राष्ट्र बन सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में "सहकारिता और युवा" का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। सहकारिता एक ऐसा माध्यम है, जो सामूहिक प्रयास, समान भागीदारी और साझा लाभ के सिद्धांत पर आधारित है, और युवाओं को आत्मनिर्भर बनने का सशक्त मंच प्रदान करता है।

सहकारिता का अर्थ है—साथ मिलकर कार्य करना और एक—दूसरे के सहयोग से प्रगति करना। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें लोग अपनी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वेच्छा से एक संगठन बनाते हैं। इन संगठनों का संचालन लोकतांत्रिक तरीके से होता है, जहाँ प्रत्येक सदस्य की समान भागीदारी और जिम्मेदारी होती है। भारत में सहकारिता आंदोलन ने किसानों, छोटे व्यापारियों, कारीगरों और कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब समय की मांग है कि इस आंदोलन में युवाओं की भागीदारी को और अधिक बढ़ाया जाए।

आज का युवा वर्ग नई सोच, आधुनिक तकनीक और नवाचार से परिपूर्ण है। वे पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर कुछ नया करने की क्षमता रखते हैं। सहकारिता उन्हें एक ऐसा मंच देती है, जहाँ वे अपनी क्षमताओं का उपयोग करते हुए सामूहिक रूप से आगे बढ़ सकते हैं। यदि युवा मिलकर सहकारी समितियां बनाएं—जैसे कृषि, डेयरी, स्टार्टअप, डिजिटल सेवाएं, हस्तशिल्प, या ई—कॉमर्सकृतो वे न केवल अपने लिए रोजगार के अवसर सृजित कर सकते हैं, बल्कि समाज के अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान कर सकते हैं।

सहकारिता से जुड़कर युवाओं को कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण लाभ है–रोजगार का सृजन। वर्तमान समय में बेरोजगारी एक बड़ी चुनौती है, लेकिन सहकारिता इस समस्या का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। युवा कम पूंजी में भी सामूहिक रूप से व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और जोखिम को आपस में बांट सकते हैं। इससे उनके ऊपर आर्थिक दबाव कम होता है और सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

इसके अतिरिक्त, सहकारिता युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है। सामूहिक प्रयास से वे बड़े स्तर पर उत्पादन और विपणन कर सकते हैं, जिससे उन्हें बेहतर लाभ प्राप्त होता है। साथ ही, सहकारिता में कार्य करने से युवाओं में नेतृत्व क्षमता, प्रबंधन कौशल और निर्णय लेने की योग्यता का विकास होता है। यह उनके व्यक्तित्व को निखारता है और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करता है।

सहकारिता का एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहलू भी है। यह समाज में सहयोग, समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है। जब युवा एक साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो उनमें परस्पर विश्वास और एकता का विकास होता है। इससे सामाजिक समरसता मजबूत होती है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

आज का युग डिजिटल क्रांति का है। इसलिए सहकारिता को भी डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ना आवश्यक है। ई–कॉमर्स, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन मार्केटिंग और सोशल मीडिया के माध्यम से सहकारी संस्थाएं अपने उत्पादों और सेवाओं को व्यापक स्तर पर पहुंचा सकती हैं। युवा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि वे तकनीकी रूप से अधिक सक्षम होते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सहकारिता और युवा एक–दूसरे के पूरक हैं। जहाँ सहकारिता युवाओं को अवसर और मंच प्रदान करती है, वहीं युवा सहकारिता में नई ऊर्जा, नवाचार और गति लाते हैं। यदि दोनों का सही समन्वय किया जाए, तो यह देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है।

सहकारिता विभाग हरियाणा का यह लक्ष्य है कि युवाओं को सहकारिता से जोड़ें, उन्हें इसके लाभों के बारे में जागरूक करें और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करें। सहकारिता के माध्यम से न केवल युवाओं का भविष्य उज्ज्वल होगा, बल्कि एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण भी संभव हो सकेगा।

# परिवारों की खुशहाली और नारी सशक्तिकरण का बड़ा माध्यम सहकार

## सहकार को हर घर से जोड़ने की मुहिम जल्द शुरू

**अरविंद शर्मा**

दिनांक 8 मार्च 2026 को हरकोफेड द्वारा गोहाना के गढ़ी उजाले खां गांव में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सहकारिता मंत्री अरविंद शर्मा व उनकी धर्मपत्नी डॉ. रीटा शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। हरकोफेड के प्रचार अधिकारी सौरव अत्री, सहायक रजिस्ट्रार प्रशांत कौशिक एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में गोहाना की लगभग 1000 महिलाओं ने हिस्सा लिया।

समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित करते हुए डॉ. रीटा शर्मा ने केंद्र, प्रदेश सरकार की योजनाओं के बारे में महिलाओं को जागरूक और सतर्क रहने का संदेश दिया। उन्होनें कहा है कि देश में सहकार परिवारों की खुशहाली और नारी सशक्तिकरण का बड़ा माध्यम बनेगा। कार्यक्रम में स्वयं सहायता ग्रूपों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई। सहकारिता मंत्री ने सीएम पैक्सों, पैक्सों, स्वयं सहायता समूहों, संगठन पदाधिकारियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दी।

सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने देश के 140 करोड़ नागरिकों को सहकारिता क्षेत्र से जोडने का जो संकल्प लिया है, हरियाणा उस दिशा में हर घर को सहकार से जोडने की मुहिम शुरू करेगा और इसकी शुरुआत गोहाना से होगी। यही पहल नारी, परिवार और देश को सशक्त बनाएगी।

कैबिनेट मंत्री अरविंद शर्मा ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी का भी विचार है कि हर घर सहकारिता से जुड़े, ताकि सहकारिता के माध्यम से गांव गांव में समृद्धि और विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। इसी दिशा में कार्य करते हुए उन्होंने विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि पायलट प्रोजेक्ट के तहत गोहाना क्षेत्र में हर घर सहकार से जुड़े अभियान को तेजी से आगे बढ़ाया जाए ताकि अधिक से अधिक परिवार सहकारिता आंदोलन का हिस्सा बन सकें। उन्होंने मेरी सखी जनसंपर्क कार्यक्रम में उमड़ी इलाके की महिलाओं से संवाद करते हुए कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण पर जोर देने से सहकारिता आंदोलन मजबूत होगा।

इस अवसर पर सहकारी चीनी मिल, आहुलाना एमडी अंकिता वर्मा, सहायक रजिस्ट्रार गोहाना, श्री प्रशांत शर्मा, शिक्षा अधिकारी हरकोफैड जगदीप सिंह सहित हरकोफैड के तमाम अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सहकारिता विभाग, हरियाणा
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
के उपलक्ष

सहकारिता विभाग

हरकोफैड

सहकारिता विभाग, हरियाणा

सहकारिता विभाग, हरियाणा

राकेश कुमार, ऋतम्भरा एवं अनुराधा बिश्नोई
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बावल
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

# प्राकृतिक खेती : परंपरा, पर्यावरण और संभावनाएँ

प्राकृतिक खेती का मतलब है बिना रसायन के या केमिकल रहित खेती करना। यह खेती का एक ऐसा तरीका है जिसमें फसलें, पेड़ और जानवर सब साथ मिलकर काम करते हैं। जिसमें फसलें, पेड़ और जानवर सब साथ मिलकर काम करते हैं। इससे खेत की मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है और फसलों के लिए हानिकारक कीड़ों व बीमारियों से बचाव होता है। इसमें पशुओं (जैसे गाय) की मदद से खेती की जाती है। प्राकृतिक खेती न सिर्फ पर्यावरण को साफ रखती है, बल्कि मिट्टी की ताकत बढ़ाती है और हवा में घुलनशील खतरनाक गैसें भी कम करती है।

प्राकृतिक खेती का विचार सबसे पहले जापान के किसान और दार्शनिक मासानोबू फुकुओका ने 1975 में अपनी प्रसिद्ध किताब 'द वन–स्ट्रॉ रेवोल्यूशन' में दिया था। प्राकृतिक खेती पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों (जैसे पेड़ पौधे, जानवर, कीड़े और मिट्टी के जीव) पर आधारित होती है। इसमें मृदा की ऊपरी सतह पर हो सूक्ष्मजीवों और केंचुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को बढ़ावा दिया जाता है। इस खेती में मिट्टी और पौधे इस तरह से काम करते हैं कि वे वातावरण से कार्बन सोख सकें। इससे पर्यावरण को फायदा होता है। इस खेती में गाय जैसे पशु आवश्यक अंग होते हैं। गाय के गोबर और मूत्र से जीवामृत, घनजीवामृत और बीजामृत जैसे जैविक खाद तैयार किए जाते हैं जो खेती के लिए बहुत उपयोगी होते है। प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य यह हैं कि कम संसाधनों में ज्यादा और सुरक्षित फसल ली जा सके।

### 1. प्राकृतिक खेती की परिभाषा :

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार : प्राकृतिक खेती एक रसायन मुक्त खेती की प्रणाली है, जिसमें खेत में केवल कम लागत वाले इनपुट (जैसे देसी गाय का गोबर, गोमूत्र और पौधों से बने घोल) का प्रयोग होता है। इसके साथ ही, मल्चिंग (मिट्टी को ढकना) और इंटरक्रॉपिंग (फसल मिश्रण) जैसी प्राकृतिक तकनीकों का प्रयोग भी किया जाता है।

### 2. नीति आयोग के अनुसार :

प्राकृतिक खेती को 'रसायन मुक्त और पशुधन आधारित खेती' कहा जाता है। यह प्रणाली प्राकृतिक पारिस्थितिकी पर आधारित पर आधारित होती है, जिसमें फसलें, पेड़ और जानवर एक–दूसरे के पूरक बनते हैं। इससे जैव विविधता का बेहतर उपयोग होता है और खेती अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनती है।

भारत में सरकार ने परंपरागत कृषि विकास योजना के तहत प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति कार्यक्रम शुरू किया है। इस योजना का मकसद यह है कि किसान बाहर से महंगे खाद या दवाइयाँ न खरीदें, बल्कि पुराने देसी तरीकों से खेती करें, जिससे लागत कम हो और उपज भी अच्छी हो।

### प्राकृतिक खेती का महत्व :

**स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद :** इसमें किसी भी तरह के केमिकल या रासायनिक खाद का इस्तेमाल नहीं होता, इसलिए इससे उगाया गया खाना स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होता है, और पोषक तत्वों से भरपूर होता है।

**पानी की कम जरूरत :** इस खेती में फसलें एक–दूसरे की मदद करती हैं और मिट्टी को ढककर पानी के वाष्पीकरण को रोकती हैं। इससे कम पानी में भी अच्छी फसल मिलती है। यानी ' हर बूँद का सही इस्तेमाल'।

**मिट्टी की सेहत में सुधार :** यह खेती मिट्टी में रहने वाले केंचुओं और सूक्ष्म जीवों की संख्या को बढ़ावा देती है, जो मिट्टी को उपजाऊ और स्वस्थ बनाते है।

**जैव विविधता का संरक्षण :** प्राकृतिक खेती के चलते खेतों में मधुमक्खी तितली, पक्षी और अन्य लाभकारी कीटों की संख्या बनी रहती है, जो परागण और जैव विविधता में सहायक होते हैं।

**स्थानीय बीजों का प्रयोग :** यह खेती देसी और पारंपरिक बीजों के उपयोग को बढ़ावा देती है, जिससे बीजों की आत्मनिर्भरता और जलवायु अनुकूलता सुनिश्चित होती है।

**महिला किसानों की भागीदारी :** इस खेती में उपयोग किए जाने वाले जैविक घोल तैयार करने और फसल की देखरेख में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती है, जो कि महिला सशक्तिकरण की तरफ एक अच्छा कदम है।

**दीर्घकालिक लाभः** शुरूआत में उपज कम हो सकती है, परंतु कुछ वर्षों के बाद मिट्टी की उपजाऊ शक्ति सुधरने से स्थायी और फसलों की अच्छी ऊपज मिलती है।

**पर्यावरण की रक्षा :** प्राकृतिक खेती पर्यावरण के लिए फायदेमंद है। यह पानी का सही उपयोग करती है, जैव विविधता को बढ़ावा देती है और वायुमंडल में कार्बन व नाइट्रोजन गैसों की मात्रा को कम करती है।

**कम खर्च वाली खेती :** प्राकृतिक खेती में ज्यादा पैसा खर्च नहीं होता। इस खेती में किसान को बाजार से महंगे रायायनिक खाद, कीटनाशक या बीज खरीदने की जरूरत नहीं हाती, बल्कि खेत पर उपलब्ध संसाधनों से खेती की जाती है।

**प्राकृतिक आपदाओं से बचाव :** इस खेती से मिट्टी की संरचना में सुधार होता है। मिट्टी की सरंचना बेहतर होने से सूखा, बाढ़ और तूफान जैसे मौसम के खतरों से फसलें बची रह सकती हैं। इससे खेती ज्यादा मजबूत और टिकाऊ बनती है।

**भूमि क्षरण की रोकथाम :** जुताई न करने और खेत को जैविक सामग्री से ढँकने के कारण मिट्टी का कटाव और क्षरण कम होता है।

### प्राकृतिक खेती और जैविक खेती के बीच समानताएं :

- दोनों ही रसायन–मुक्त खेती हैं।
- ये मुख्य रूप से बायोमास (फसल के बचे हुए हिस्सों और पौधों का जैविक कचरा) प्रबंधन, प्राकृतिक पोषक तत्व पुनर्चक्रण, फसल चक्र और बहुफसलीय खेती पर निर्भर करती हैं।

### प्राकृतिक खेती से जुड़ी चिंताए :

- **उपज संबंधी अनिश्चितता :** पारंपरिक खेती की तुलना में प्राकृतिक खेती में अक्सर कम पैदावार होती है और प्रारंभ में अधिक निवेश की आवश्यकता पड़ती है, जिससे किसानों की आय घटने का डर रहता है।
- **इनपुट की आपूर्ति की चुनौती :** खेत में प्रयोग किए जाने वाले जैविक पदार्थ बनाने के लिए गाय का गोबर और गोमूत्र लगातार उपलब्ध कराना एक बड़ी समस्या है।
- **ज्ञान और कौशल की कमी :** जीवामृत और बीजपमृत जैसे जैव –इनपुट को तैयार करने और प्रयोग करने के लिए विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिसकी कमी के कारण खेती का विस्तार बाधित होता है।
- **बाजार संबंधी चुनौतियां :** प्राकृतिक कृषि उत्पादों के लिए उपयुक्त आपूर्ति श्रृंखला, उपभोक्ता जागरूकता, विपणन सहायता और प्रमाणन प्रणाली का अभाव है, जिसमें किसानों को कृषि उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।
- 
- **नीतिगत कमियां :** प्राकृतिक इनपुट की गुणवत्ता को लेकर कोई स्पष्ट मानक नहीं हैं और सरकारी सहायता भी सीमित है, जिससे नवाचार और विस्तार धीमा होता है।
- **जलवायु परिवर्तन और कीट खतरे :** प्राकृतिक खेती मौसम की चरम स्थितियों और कीटों के हमले के प्रति संवेदनशील होती है। उदाहरण : राजस्थान में टिडिडयों का हमला।

### प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना अति आवश्यक है :

- **प्रमाणन और ब्रांडिंग की आवश्यकता :** प्राकृतिक कृषि उत्पादों को बाजार में उचित पहचान और मूल्य दिलाने के लिए विशेष प्राकृतिक उत्पाद प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।
- **वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता :** प्राकृतिक खेती के प्रभावों और लाभों को व्यापक रूप से सिद्ध करने के लिए दीर्घकालिक वैज्ञानिक शोध और प्रायोगिक कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

# पृथ्वी दिवस : पर्यावरण संरक्षण का वैश्विक संकल्प

पृथ्वी मात्र एक ग्रह नहीं बल्कि हमारे जीवन का आधार है। यही वह धरा है जहां जल, वायु, वनस्पति पशु–पक्षी और मनुष्य एक संतुलित तंत्र में जीवन व्यापन करते है। आधुनिक विकास, औद्योगिकीकरण, बढ़ती जनसंख्या और ससाधनों के अंधाधुंध उपयोग ने पृथ्वी के प्राकृतिक संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इन्ही चिंताओं के कारण पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने और पृथ्वी की रक्षा का संकल्प लेने हेतु हर वर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। पृथ्वी दिवस कोई उत्सव नहीं बल्कि मानव समाज को याद दिलाने का माध्यम है कि यदि हमने प्रकृति के साथ संतुलन नहीं बनाया तो आने वाले समय में पृथ्वी पर जीवन संकट में पड़ सकता है।

## भारत में पर्यावरण संरक्षण की परम्परा

भारत में प्राचीन काल से ही प्रकृति को पूजनीय माना गया है। नदियां पर्वतों वृक्षों और पशु पक्षियों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। भारतीय परम्परा में वृक्षों की पूजा की जाती है। भारतीय परम्परा में वृक्षों की पूजा की जाती हे। जैसे पीपल, बरगद, तुलसी आवंला आदि। नदियों को भी देवी तुल्य समझा जाता है। उनकी पवित्रता, सुलभता, सहजता के कारण माँ का दर्जा भी दिया जाता है। हमारी धरा में पर्वतों को भी श्रेष्ठ संज्ञा दी जाती है।

## पृथ्वी का महत्व जीवन का आधार

पृथ्वी ही जीवन का आधार है जहाँ जल उपयुक्त तापमान, ऑक्सीजन और जैव विविधता है। वन हमें ऑक्सीजन देते हैं, नदियां हमें जल प्रदान करती है और मिट्टी हमें अन्न देती है। पृथ्वी के प्रमुख संसाधन जल, वन, मिट्टी खनिज जैव विविधता है ये सभी संसाधन मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि ये संसाधन नष्ट हो जाए तो मानव जीवन असंभव हो जाएगा।

## पर्यावरण प्रदूषण – पृथ्वी के सामने सबसे बड़ी चुनौती

औद्योगिक धुएं, वाहनों के उत्सर्जन और जलते ईंधन के कारण वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। इससे न केवल पर्यावरण बल्कि मानव स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है।

नदियों और समुद्रों में औद्योगिक कचरा प्लास्टिक और रसायन डालने से जल प्रदूषण बढ़ रहा है। इससे जलजीवों का जीवन संकट में पड़ गया है। कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक का अत्यधिक उपयोग मिट्टी की उर्वरकता को कम कर रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण भी पृथ्वी की प्रदूषण की विकट समस्या बन गया है। वह आसानी से नष्ट नहीं होता।

## जलवायु परिवर्तन वैश्विक संकट

जलवायु परिवर्तन आज पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर जलवायु समस्या बन चुका है। ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा व कारण पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया को ग्लोबल पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया को ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, मौसम में असामान्य परिवर्तन हो रहे है जिससे सूखा और बाढ़ जैसी आपदाएं बढ़ रही है। जलवायु परिवर्तन की समस्या के कारण भविष्य में पृथ्वी पर जीवन के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

## पर्यावरण सरंक्षण : उचित कदम

अधिक से अधिक पेड़ लगाने से पर्यावरण संतुलित रहता है। पेड़ लगाना पर्यावरण सरंक्षण का उचित कदम है। बिजली और ईधन की बचत करके हम पर्यावरण का सुरक्षित रख सकते है। पर्यावरण में जल का उपयोग सावधानी से करना चाहिए। हमें जल का भी सरंक्षण करना चाहिए और भावी पीढ़ी को भी जल की महत्ता से अवगत करवाना चाहिए। हम कचरे का पुनर्चक्रित करके संसाधनों की बचत कर सकते है। हमें पर्यावरण अनुकूल का उपयोग करना चाहिए और प्लास्टिक का उपयोग से बचना चाहिए।

## विद्यार्थियों की भूमिका

पर्यावरण सरंक्षण में विद्यार्थियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। छोटे–छोटे कदम उठाकर ही बड़ा परिवर्तन ला सकते है जैसे पेड़, लगाना, पानी बचाना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पर्यावरण के प्रति दूसरों को जागरूक करना आदि। यदि बच्चे बचपन से ही पर्यावरण के महत्व को समझेंगे तो वे भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बनेंगे।

## पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस के अवसर पर कई प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती है जैसे वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान पर्यावरण रैलियां जागरूकता कार्यक्रम, स्कूलों और कॉलेजों में विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। पृथ्वी दिवस हमें यह सिखाता है प्रकृति और मानव जीवन एक दूसरे से गहराई से जुडे हुए हैं।

पृथ्वी दिवस एक दिन का कार्यक्रम नहीं बल्कि वैश्विक आदोलन है। यह हमें प्रकृति की रक्षा के लिए प्रेरित करता हे। हम अपने छोट–छोटे प्रयासों का पृथ्वी को सुरक्षित सुंदर बना सकते हे।

आओ, हम सब सकल्प लें, हम पृथ्वी की रक्षा करेंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण रखेंगे।

# राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा

दिनांक :– 17 मार्च 2026 राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा के सेमिनार हॉल में कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम हरकोफैड , पंचकूला के तत्वावधान में रजनी कपूर के निर्देशन में आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय की प्लेसमेंट सेल तथा राजनीति विज्ञान विभाग का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में कौशल विकास, रोजगारपरक दक्षताओं तथा व्यावसायिक जागरूकता को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर विद्यार्थियों को विभिन्न रोजगार अवसरों, व्यक्तित्व विकास एवं रोजगार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गईं।

कार्यक्रम में साइबर सुरक्षा जागरूकता पर भी एक व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें श्याम सुंदर, थानाधिकारी साइबर सुरक्षा, सिरसा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर अपराधों से बचाव, ऑनलाइन सुरक्षा, डिजिटल धोखाधडी से बचने के उपाय एवं सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। यह सत्र विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ। कार्य्रक्रम का संचालन संदीप बेनीवाल ने किया उन्होंने सहकारिता के महत्व को बताते हुए भारतीय संस्कृति में सहकारिता की ऐतिहासिकता को रेखांकित करते हुए कहा कि हम सदियों से ही सहकारिता में जी रहे हैं चाहे वह कृषि क्षेत्र हो या संयुक्त परिवार परंपरा हो ।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या प्रिंसिपल श्रीमति अनीता मारिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही डॉ मंजू मेहता, डॉ. सविता डॉ. संजीत कुमार एवं अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए विद्यार्थियों को इस प्रकार के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

अंत में कार्यक्रम का समापन धन्यवाद के साथ हुआ, जिसमें सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया।

# वीटा प्लांट में दो दिवसीय कर्मचारी प्रशिक्षण

हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ के तत्वावधान में दिनांक 16 व 17 मार्च 2026 को वीटा प्लांट रोहतक में दो दिवसीय कर्मचारी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों को सहकारिता के सिद्धांतों, डेयरी प्रबंधन, गुणवत्ता नियंत्रण तथा नवीन योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम में विभिन्न दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान वीटा प्लांट रोहतक के मैनेजर श्री संदीप कुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सहकारिता आंदोलन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सहकारी समितियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और इनके माध्यम से किसानों एवं दुग्ध उत्पादकों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। उन्होंने वीटा प्लांट की कार्यप्रणाली, दूध संग्रहण, प्रसंस्करण तथा विपणन की पूरी प्रक्रिया के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

प्रशिक्षण सत्र में प्रवक्ताओं के रूप में श्री सुरेश नैन, श्री सुधीर वर्मा तथा श्री भूपेंद्र सांगवान ने प्रतिभागियों को सहकारिता के मूल सिद्धांतों, सदस्य भागीदारी, पारदर्शिता तथा समितियों के प्रभावी संचालन के बारे में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने बताया कि सहकारी समितियां लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित होती हैं और प्रत्येक सदस्य की भागीदारी से ही संस्था मजबूत बनती है। वक्ताओं ने समितियों में नियमित बैठकें आयोजित करने, लेखा–जोखा पारदर्शी रखने तथा सदस्यों को योजनाओं की जानकारी देने पर विशेष बल दिया।

कार्यक्रम के दौरान डेयरी क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों के उपयोग, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, पशु आहार प्रबंधन तथा दुग्ध गुणवत्ता सुधार जैसे विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की गई। प्रतिभागियों को बताया गया कि वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर दूध उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है और किसानों की आय को बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सरकार की विभिन्न योजनाओं तथा सहकारी समितियों को मिलने वाले लाभों की जानकारी भी दी गई।

दूसरे दिन प्रतिभागियों को वीटा प्लांट का भ्रमण कराया गया, जहां उन्होंने दूध प्रसंस्करण इकाई, पैकेजिंग सेक्शन तथा गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया। इस दौरान प्रतिभागियों ने प्लांट की कार्यप्रणाली को नजदीक से देखा और अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में लगभग 35 कर्मचारियों ने भाग लिया और प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी बताया।

दो दिवसीय कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को सहकारिता के प्रति नई प्रेरणा प्रदान की तथा डेयरी क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। अंत में आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का आश्वासन दिया।

# कर्मचारी प्रशिक्षण

दिनांक 19 एवं 20 मार्च 2026 को दि हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ पंचकूला के तत्वाधान से जिला फरीदाबाद में सहकारी कर्मचारियों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाप्रबंधक श्री संजय हुड्डा ने की। अपने संबोधन में उन्होंने सहकारी संस्थाओं को सशक्त बनाने में कर्मचारियों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यकुशलता, पारदर्शिता तथा सेवा गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस पर प्रवक्ता के रूप में डॉ. पारुल नागी असिस्टेंट प्रोफेसर, ने सहकारी संस्थाओं की कार्यप्रणाली, अभिलेख संधारण, प्रशासनिक प्रक्रियाओं तथा सदस्य सेवा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कर्मचारियों को समयबद्ध कार्य, समन्वय तथा जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

द्वितीय सत्र में श्री जितेंद्र कुमार ने लेखा प्रणाली पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने नकदी पुस्तिका, खातों के संधारण, ऋण अभिलेख, ऑडिट प्रक्रिया तथा वित्तीय अनुशासन के बारे में व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाया। प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। श्री उदयपाल भाटी ने रिकवरी के नियम बताए।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस पर प्रवक्ता के रूप में डॉ. पारुल, असिस्टेंट प्रोफेसर, ने सहकारी संस्थाओं की कार्यप्रणाली, अभिलेख संधारण, प्रशासनिक प्रक्रियाओं तथा सदस्य सेवा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कर्मचारियों को समयबद्ध कार्य, समन्वय तथा जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

दूसरे दिन प्रशिक्षण में सहकारी संस्थाओं की योजनाओं, रिकॉर्ड प्रबंधन, डिजिटल कार्यप्रणाली तथा सदस्य सेवा को बेहतर बनाने पर चर्चा की गई। अधिकारियों ने कर्मचारियों को कार्य में पारदर्शिता बनाए रखने तथा योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए प्रेरित किया। श्री उदयपाल भाटी ने रिकवरी के नियम बताएं।

दो दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न सहकारी समितियों के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक रहा। अंत में सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए आशा व्यक्त की गई कि प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को वे अपने कार्यक्षेत्र में लागू करेंगे और सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाने में योगदान देंगे।

# विचार गोष्ठी

हरकोफैड पंचकूला द्वारा महिलाओं के लिए विचार गोष्ठी का आयोजन फतेहाबाद के सिंथना गाँव में 6 मार्च 2026 में किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जितेंद्र कौशिक जी थे जिन्होंने महिलाओं को सहकारिता के साथ जुड़ने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में अतिथि कोऑपरेटिव बैंक से विकास अधिकारी श्री सतीश कुमार और श्री जितेंद्र जी उपस्थित थे जिन्होंने महिलाओं को बैंक की योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने स्वयं रोजगार शुरू करने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किस तरह योजनाओं का लाभ उठाया जा सकता हैं। पशुपालन विभाग से श्री बजरंग वर्मा जी (पशु चिकित्सक) ने पशुओं की बीमारी व नस्ल में सुधार के बारे में चर्चा की गई ।इस कार्यकम में पशुओं के बीमे की योजना के बारे में भी बताया गया। डॉक्टर सुरजीत सिंह ने जैविक खेती और प्राकृतिक खेती पर चर्चा की गई।

शिक्षा अनुदेशक श्री रजनी कपूर फतेहाबाद जी ने हरकोफैड के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। श्रीमती इंद्रावती जो की महिला सरपंच है उन्हें उनके कार्यों के लिए इस कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता भी है जिनके पास जो अन्य महिलाओं को भी जागरूक करने का प्रयास करती हैं । इस अवसर ऋषिपाल जी ने कार्यक्रम मे उपस्थित सभी विभाग के लोगों का आभार व्यक्त किया।

# महिला दिवस समारोह

8 मार्च 2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ पंचकूला के तत्वाधान के साल्हावास बहुउद्देशीय कृषि सहकारी समिति साल्हावास जिला झज्जर के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती निशा तंवर जी जिला विकास और पंचायत अधिकारी झज्जर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सुदेश देवी सरपंच साल्हावास ने की । श्री वीरेंद्र सिंह सहायक रजिस्टर सहकारी समितियां मतियां झज्जर श्रीमती मुनेश देवी चेयरपर्सन ब्लॉक समिति साल्हावास डॉक्टर प्रियंका सहायक प्रोफेसर राजकीय नेहरु कॉलेज झज्जर श्रीमती कमला नागर राष्ट्रीय आजीविका मिशन समन्वयक साल्हावास सहकारी बैंक शाखा प्रबंधक श्री नत्थूराम एमपैक्स प्रबंधक और कर्मचारियों 150 से ज्यादा स्वयं सहायता समूह व संयुक्त देयता समूह में सहकारी समिति की महिला सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में दी हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ पंचकूला वृत कार्यालय रोहतक से सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यनारायण यादव ने मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथियों और वक्ताओं को पौधे देकर स्वागत किया । अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रकाश डालते हुए सहकारिता द्वारा महिला सशक्तिकरण व हरियाणा सरकार में भारत सरकार द्वारा की जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। सहायक रजिस्टर श्री वीरेंद्र सिंह ने समाज में महिला शक्ति के योगदान के बारे में बताया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय दिवस 2026 का विषय'' देने से लाभ होता है ''(ळपअम जव हमज ) पर प्रकाश डाला। डॉ प्रियंका सहायक प्रोफेसर ने महिलाओं के गाँव से लेकर ग्लोबल स्तर तक किए गए योगदान के बारे में बताया। श्रीमती मंजू यादव पूर्व पार्षद भिरड ने महिलाओं को ''ळपअम जव हमज'' विषय के तहत आह्वान किया कि सब महिलाएं अपनी साथी महिलाओं के सम्मान के साथ समान अवसर, शिक्षा और समर्थन कर सकती है ।कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला विकास और पंचायत अधिकारी झज्जर श्रीमती निशा तंवर ने उपस्थित महिलाओं को शिक्षा रोजगार के बल पर आतंकवाद के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि महिलाएं सहकारी समितियां बनाकर स्वयं सहायता समूह बनाकर सहयोग व संसाधनों के आदान–प्रदान के माध्यम से ,महिला सशक्तिकरण के माध्यम से स्वयं का रोजगार सृजन कर सकती है। मुख्य अतिथि ने स्वयं समूह की महिलाओं को स्मृति चिन्ह देखकर सम्मानित किया। सरपंच सालावास में शाखा प्रबंधक सहकारी बैंक ने सालावास ने कार्यक्रम में सफल आयोजन के लिए सहायक सरकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यनारायण यादव हरकोफैड पंचकूला का धन्यवाद किया। सहायता रजिस्टर सहकारी समितियां झज्जर श्री वीरेंद्र सिंह ने प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया।

# किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

गाँव कुलसी में हरकोफैड पंचकूला के तत्वाधान में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 मार्च को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सहायक रजिस्टर वीरेंद्र सिंह जी ने कहा कि एम पैक्स का गठन करके युवा पीढ़ी द्वारा स्वयं के रोजगार को उत्पन्न किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व और सहकारिता मंत्री डॉक्टर अरविंद शर्मा के मार्गदर्शन में चल रही सहकारिता से जुड़ी योजनाओं के प्रति किसानों को जागरूक करना है ।

उन्होंने एम पैक्स के अतिरिक्त अन्य समितियों के गठन उनके कार्य प्रणाली व उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों से फसल चक्र, प्राकृतिक खेती व फसल अवशेष ने जलाने का अनुरोध किया। किसानों को भविष्य में गेहूं कटाई के उपरांत फांस ना जलाने की शपथ दिलवाई।

इस बीच पैक्स प्रतिनिधि चांद सिंह ने उपस्थित किसानों का स्वागत करते हुए मोबाइल बैंकिंग के उपयोग में रखने वाली सावधानियां से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि बहादुरगढ़ एमपैक्स के सीएससी सेंटर पर सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई है जिससे किसान और आमजन इनका लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने नागरिकों से पैक्स ऋणों की समय पर वसूली देकर ब्याज माफी सुविधा का लाभ उठाने का अनुरोध किया। हरकोफैड के शिक्षा अनुदेशक एस एन कौशिक ने बताया कि सहकारी सहकारिता विभाग में कार्यरत सभी सहकारी संस्थाओं की कार्य योजनाएँ और गतिविधियाँ को जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रचार प्रसार का कार्य करती है ।

उन्होंने सहकारी समितियां के योगदान पर प्रकाश डाला। किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम से किसानों को नई तकनीकों, वैज्ञानिक और सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें सशक्त बनाते हैं। इससे न केवल देश की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होती हैं।

# नव वर्ष का आगमन

इस वर्ष नव वर्ष का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (19 मार्च 2026) से हो चुका है। नव वर्ष की सभी पाठकों के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएँ व बधाई।

नए जमाने के लोगों का अंग्रेजी कलैण्डर के अनुसार जनवरी से शुरू होता है जबकि पुराने ज्ञानी पुरूषों/महानुभाव लोगों के लिये सही में नया वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को ही मनाया जाता है।

जो लोग जनवरी से नया वर्ष मनाते हैं उन्हें राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता जरूर पढ़नी चाहिए जिसके कुछ अंश निम्न है :–

शीर्षक कविता
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि
नव वर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर
जय गान सुनाया जायेगा।
युक्ति – प्रमाण से स्वंय सिद्ध,
नव वर्ष हमारा ही प्रसिद्ध
आर्यो की कीर्ति सदा–सदा
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा
अनमोल विरासत के धनिकों को,
चाहिये कोई उधार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं

जनवरी माह से शुरू होने वाला वर्ष में केवल कैलेंडर ही बदलता है। सर्दी में सब घर में दुबके हुए होते हैं तथा प्रकृति में कोई कोई परिवर्तन नहीं होता। चैत्र माह से आरंभ होने वाले वर्ष की महिमा ही अलग हैं। मान्यता है कि इस तिथि से ब्रह्माजी ने सृष्टि निर्माण प्रारम्भ किया था।

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथाहेनि,
शुक्ल पक्षेत्र समग्रे तु, तदा सूर्योदये सति ।।

इस वर्ष से जुडे कुछ ऐतिहासिक तथ्य भी है :–
महाराजा विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी संवत् का शुभारम्भ।

महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना ।
प्रभु रामचन्द्र जी का राज्यभिषेक दिवस।
देव भगवान झूलेलाल जी का जन्म दिवस।
महाराज युधिष्ठिर का राज तिलक।
इस दिवस से आरम्भ होते नवरात्रों के महान पर्व।
द्वितीय गुरू जी श्री अंगद देव जी का प्रकाश महोत्सव।
राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन आज भी कई हिन्दू संगठन आर्य समाजी शुक्ल व भारत विकास परिषद जैसे सगंठन अपना नया वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही मनाते हैं। भारतीय परम्परा सांस्कृतिक गौरव व हिन्दी महीने की गणना अनुसार सदी में हमारा नव वर्ष यही हैं न कि जनवरी से। इस वर्ष की शुरूआत से ही नए शुभ संकेत मिलने शुरू होते हैं जैसे कि प्रकृति के आंगन में नए रंग दिखाई देने लगते हैं। नई फसल के पकने, नए पत्तों प फूलों की महक स्वतः आनी शुरू हो जाती हैं।

बच्चों की परीक्षाओं की समाप्ति व अगली कक्षा की खुशी इन्हीं दिनों में देखने को मिलती है। सरकारी/व्यवसायिक लोगों में पुराने वर्ष की बही खातों की अन्तिम रूप देने तथा नई बही की शुरूआत करने की तैयारी, सुबह–सुबह कोयल की मधुर कूक भी सुनाई देने लगती हैं।

नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन
पुलकित हो सारा जनगणमन।

शाम सुन्दर नागपाल
लेखाधिकारी (सेवानिवृत) हरकोफैड

# वैसाखी

धरती ने धन्यवाद का गीत गाया।
सुनहरी गेहूँ की बालियां का मन ललचाया।
सूरज भी नई ऊर्जा है लाया
चारों तरफ अदभुत वातावरण बनाया
ऋतु परिवर्तन से किसान हर्षाया
वैसाखी का त्यौहार है आया।

ऋतुओं के परिवर्तन का त्योहार केवल एक तिथि नहीं बल्कि परिश्रम आस्था, साहस और सामूहिकता का जीवत प्रतीक है। वैसाखी के आगमन के साथ ही सूर्य की किरणें नई ऊर्जा लेकर आती है। खेतों में सुनहरी गेहूँ की बलियाँ झूम–झूम कर लहराने लगती है। ढोल की थाप, रंग–बिरंगे परिधान भक्ति भाव, वैसाखी को बहुआयामी उत्सव बना देते है।

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – संघर्ष से आत्मसम्मान तक** – 1699 में बैसाखी के ऐतिहासिक दिन आनंदपुर साहिब में दसवें गुरू गोविन्द सिंह जी ने खालसा पथ की स्थापना की। खालसा का अर्थ है शुद्ध पवित्र और स्वतंत्र। गुरू गोविंद जी ने पांच व्यक्तियाँ को आगे आने का आह्वान किया। जिन्होंने निर्भर होकर प्राणों की आहुति दी। ये पांच व्यक्ति ''पंज प्यारे''कहलाए। गुरू गोविन्द सिंह का संदेश स्पष्ट था।

**जब अन्याय असहनीय हो जाए, तब उसका प्रतिरोध धर्म बन जाते है।**

**कृषि और प्रकृति का उत्सव**

बैसाखी का समय विशेषकर गेहूँ की कटाई का होता है। किसान खेतों में लहलहाती सुनहरी बलियां को देखकर ईश्वर का धन्यवाद करते है और आने वाली फसल के लिए आशीर्वाद माँगते है। बैसाखी का त्यौहार प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर होता हैं। बैसाखी का संदेश और भी प्रांसगिक हो जाता है। प्रकृति की रक्षा ही समृद्धि की रक्षा है।

**लोक–संस्कृति और उल्लास**

बैसाखी के अवसर पर लोकसंस्कृति अपनी चरम सीमा पर होती है। ढोल की थाप पर लोगों के थिरकने से वातावरण आनंदमय हो जाती है। मक्की की रोटी, सरसों का साग लस्सी और पिन्नी जैसे व्यंजन इस उत्सव को और भी स्वादिष्ट बना देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मेलों का आयोजन, लोक–गीत भांगड़ा, गिद्धा, पारम्परिक खेलों से मन आनंदमय हो जाता है।

**सामाजिक समानता और एकता का संदेश**

बैसाखी का मूल संदेश समानता और साहस है। '' न कोई ऊँच, न कोई नीच–सब मानव एक समान।'' यह विचार केवल सिख धर्म तक सीमित नही, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा है। सभी को समान अधिकार और सम्मान देना यही बैसाखी की परम्परा है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि अलग–अलग परम्पराओं के बावजूद हमारी मूल भावना है प्रेम, सहयोग और भाईचारा।

**आधुनिक संदर्भ में बैसाखी**

आज बैसाखी केवल गाँवों तक सीमित नहीं रही। महानगरों में भी सास्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य–नाटिकाएं और सामूहिक सभाएं आयोजित की जाती है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी बैसाखी पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते है जिससे छात्र–छात्राएँ इतिहास और संस्कृति से परिचित होते है।

**साहित्य और कला में बैसाखी और राष्ट्रीय चेतना**

पंजाबी लोकगीतों और साहित्य में बैसाखी का विशेष स्थान है। कवियों ने इसे उत्साह और समृद्धि का प्रतीक बनाना है। चित्रकला, नृत्य कला, संगीत और रंगमंच में भी बैसाखी के दृश्यों का भी आयोजन किया जाता है। 1919 में जलियावाला बाग की घटना राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बन गई। इस प्रकार बैसाखी केवल आनंद का पर्व नहीं इतिहास की स्मृति भी है जो हमें साहस और एकता का महत्व सिखाती है।

**बैसाखी नई सुबह की आशा**

बैसाखी के साथ एक नई सुबह की आशा खिलती है जो हमें सिखाती है कि परिश्रम आस्था और साहस के साथ हम हर चुनौती का सामना कर सकते है। बैसाखी हमें यह विश्वास दिलाती है कि हर संघर्ष के बाद समृद्धि की सुबह अवश्य आती है।

**अलका शर्मा**

# प्रभु परशुराम

वंदन है उन अखंड परम तेजस्वी,
अविनाशी ब्राह्मण यशस्वी को,
नमन है शास्त्रज्ञानी, शस्त्र निपुण,
दिव्यात्मा परशुराम जी को।

महर्षि जमदग्नि द्वारा संपन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से,
देवराज इंद्र के वरदान स्वरूप ,
माता रेणुका के गर्भ से बैसाख शुक्ल तृतीया को,
मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के मानपुर के जानापाव पर्वत पर,
प्रभु परशुराम ने अवतार लिया।

यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात,
नेशाल पर्वत पर जाकर वेद अध्ययन किया,
विश्वामित्र और ऋचीक के आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर,
अल्प आयु में ब्रह्मविद्या ,मृत्युंजय विद्या को प्राप्त किया,
गंधमादन पर्वत पर भगवान आशुतोष ने ,
अजेय परशु, त्रर्यंबक धनुष प्रदान किया।

ब्राह्मण के रूप में जन्म लेकर ,
क्षत्रिय की तरह अन्याय को समाप्त करने का कार्य किया,
उन्होंने 21 बार धरा को क्षत्रिय विहीन कर दिया,
त्रेता युग में भगवान विष्णु ने कल्पंत तक,
तपस्या रत होने का वरदान दिया,
क्षत्रिय के कारण भार्गव का नाम दिया।

पशु पक्षियों की भाषा से परिचित ,
उनसे संवाद करके वार्तालाप करते ,
खूंखार जानवर उनके स्पर्श मात्र से ही मित्र बन जाते,
भार्गव जी विष्णु अवतार कहलाते।

श्री राम जी के द्वारा पूजनीय कहलाते,
ब्राह्मण कुल के गुरु,
शस्त्र और शास्त्र के ज्ञाता,
महान् अजय, अमर, अविनाशी ,
आपके समक्ष हर मस्तक नतमस्तक हो जाता।

आपने अधर्म के खिलाफ लड़ी लड़ाई लड़ी,
और मानवता की भलाई करी।
भीष्म, द्रोण, करण को शस्त्र विद्या प्रदान की
त्रेता युग, द्वापर युग,और कलियुग में प्रत्यक्ष देव है ,
आप स्वयं में साक्षात सत्यमेव है।

हाथ में परशु,धर्म के साथ अडिग रूप से आसीन हैं,
ब्राह्मण कुल के लोगों को इस बात का यकीन हैं,
आज भी महेंद्र गिरी पर्वत पर तपस्या में लीन है,
विष्णु के छठे अवतार आप हर क्षेत्र में प्रवीण है,

आप हो विष्णु के अवतार प्रभु परशुराम ,
अलका कर रही आपको कोटि कोटि प्रणाम ,
दे दो अपनी प्रभा तामस के संसार में,
वरदान दो शस्त्र और शास्त्र सभी हो अधिकार में,
हे प्रभु, न्याय बने भारत की पहचान,
त्याग, तपस्या साहस, ज्ञान से बने परशुराम का जहान।

स्वरचित अलका शर्मा

NANO TECHNOLOGY
NANO UREA & DAP

SAHKAR SE SAMRIDDHI
Aatmanirabhar Bharat, Aatmanirbhar Krishi

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

IFFCO NANO UREA Plus
and
IFFCO NANO DAP
Promises
More Yield And More Profit

World's First Nano Fertilizer by IFFCO

500 ML Bottle ₹225/- only
Contains 20% NITROGEN
FREE ACCIDENT INSURANCE
500 ML Bottle ₹600/- only

IFFCO Nano UREA Plus Liquid
IFFCO Nano DAP Liquid

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones: 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website: www.iffco.coop

HOUSEFED

दी हरियाणा राज्य सहकारी आवास प्रसंघ लि0

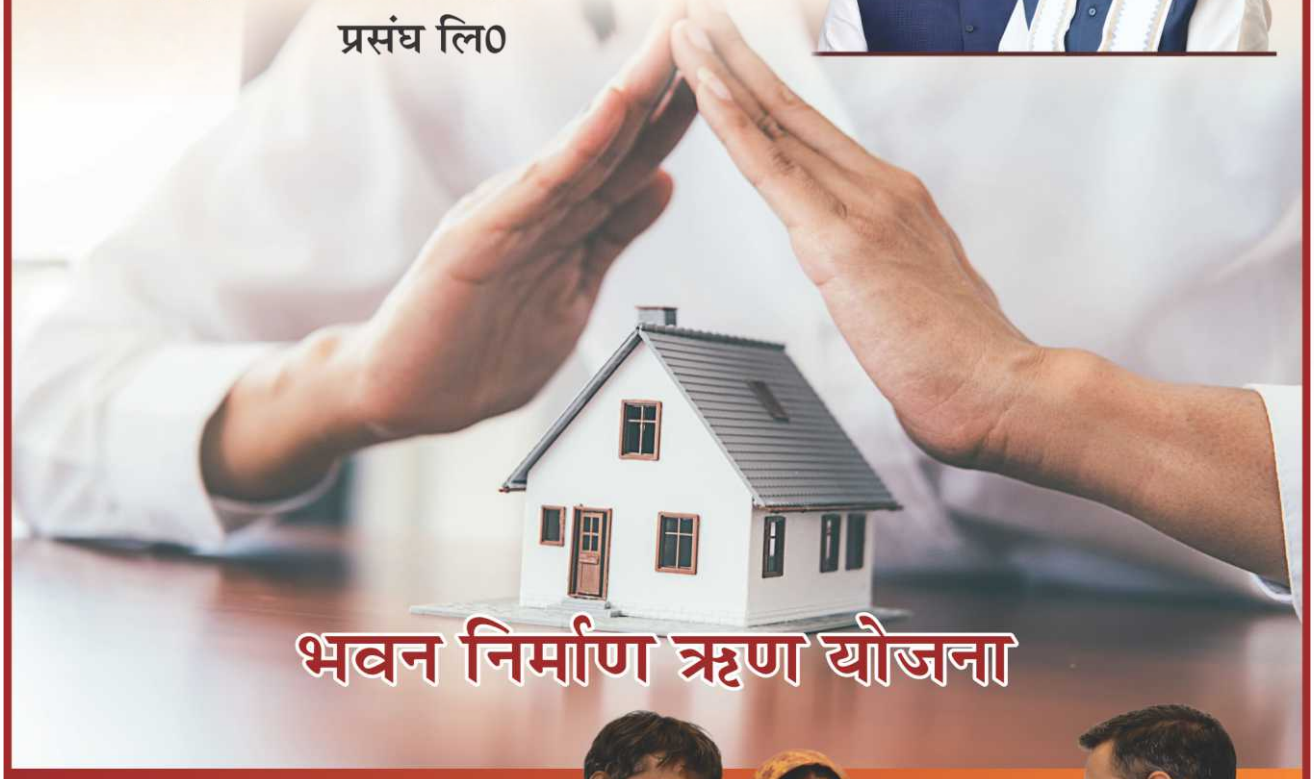

# भवन निर्माण ऋण योजना

हाउसफैड द्वारा शहरी क्षेत्रों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के पात्र व्यक्तियों को आवास निर्माण हेतु 12.50 लाख रूपये तक का ऋण 7% वार्षिक ब्याज दर पर उपलब्ध

## हर परिवार का सपना हाउसफैड से घर बने अपना

दी हरियाणा राज्य सहकारी आवास प्रसंघ लि0
बेज न0. 49-52, सेक्टर-2, पंचकूला
0172-2575847, 0172-2574142
housefedhry@gmail.com
housefed.haryana.gov.in

HARCOFED

Bays No. 49-52, Sector - 2, Panchkula https://harcofed.haryana.gov.in/ harcofed@ymail.com

हरियाणा राज्य सहकारी विकास फैडरेशन की ओर से सौरव शर्मा संपादक द्वारा हरियाणा सहकारी प्रैस 165–166, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, चण्डीगढ़ से मुद्रित व प्रकाशित तथा कार्यालय बेज नं. 49–52, प्रथम तल, सेक्टर–2, पंचकूला ।
दूरभाष : 0172–2560340, 2560332 हरकोप्रैस : 0172–2637264